IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सोशल मीडिया का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और नैतिक मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका

डा. शिप्रा गुप्ता

(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्ता

कल्पना शर्मा

(एम.एड.छात्रा)

सारांश –

सोशल मीडिया की परिभाषा में कहा गया है कि सह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोग का एक ऐसा समुह है प्रयोक्ता–जनित सामग्री के सृजन और आदान प्रदान की अनुमति देता है । इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया मोबाइल और वेब आधारित प्रौद्योगिकी से ऐसे क्रियाशील मंचों का निर्माण करता है जिनके माध्यम से व्यक्ति और समुदाय प्रयोक्ता–जनित सामग्री का संप्रेषण एवं सह–सृजन कर सकते है, उस पर विचार–विमर्श कर सकते है और उसका परिष्कार कर सकते है। यह संगठनों, समुदायों और व्यक्तियों के बीच संसार में महत्वपुर्ण और व्यापक परिवर्तनों को अंजाम देता है। 2000 के दशक के शुरू में सॉफ्टवेयर विकास कर्त्ताओं ने अंतिम इस्तेमाल कर्त्ताओं को इस बात में सक्षम बनाया कि वे वर्ल्ड़वाइड़ वेब पर स्थिर और निष्क्रिय पृष्ठों को देखने के बजाय अधिक परस्पर क्रियाशील बन सकें, ऑनलाइन या वास्तविक समुदायों में प्रयोक्ता–जनित सामग्री का इस्तेमाल कर सके। इसकी परिणीति वेब 2.0 के रूप में हुई और सबसे महत्वपूर्ण बात यह हुई कि इससे एक अद्‌भुत प्रयोग का सृजन हुआ जिसे अब हम "सोशल मीडिया" कहते है।

सोशल मीडिया सामाजिक नेटवर्किंग वेब साइटों जैसे– फेसबुक, ट्विटर, लिंकर ,यू–टयूब, लिंक्डइन, माइस्पेस, साइडक्लाउड़ और ऐसे अन्य साइटों पर इस्तेमाल कत्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट इमेज, ऑड़ियो और विडियो रूपों में जानकारी में हिस्सेदारी करने और उसे परिष्कृत करने की योग्यता और सुविधा प्रदान करता है। यह सच है कि सोशल मीडिया ने इंटरनेट का लोकतंत्रीकरण किया है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने भाषण और अभिव्यक्ति के आदर्शों को संरक्षित किया है किंतु इसके साथ ही यह भी उतना ही सही है कि इसने ऐसे दैत्यों को जन्म दिया है जो घात लगाए रहते है और लगता है कि उनकी संख्या बढ़ रही है। हाथ में रखे जाने वाले मोबाइल उपकरणों जैसे–स्मार्टफोन और टेबलेट्स की

संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है और इन उपकरणों पर इंटरनेट की उपलब्धता से वास्तविक सामाजिकरण में तात्कालिता की भावना कई गुना बढ़ गई है।

सोशल मीडिया ने इस्तेमाल कर्त्ता–जनित सामग्री के जरिए सार्वजनिक जीवन के जाने–माने व्यक्तियों की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुंचाया है, निजता, कॉपीराइट और अन्य मानवाधिकार कानुनों का अतिक्रमण किया है। इन सभी बातों के बावजुद इस अद्भुत माध्यम के विकास में कोई रूकावट नहीं आई जिसने न केवल भारत में बल्कि पुरी दुनिया में परंपरागत मीडिया का स्थान लेने और उसे मार्ग से हटाने का खतरा पैदा कर दिया है। सोशल मीडिया की अक्सर यह कह कर आलोचना की जाती है कि इसने लोगों के व्यक्तिगत रूप से मिलने की प्रवृत्ति पर विपरीत असर डाला है, जहां परंपरागत ढंग से एक–दुसरे से मिलने और बातचीत करने का समय किसी के पास नही है, लेकिन इसके बावजूद डिजिटल स्पेस सामाजिक नेटवर्किंग के नित नए आयाम और आकर्षण उपलब्ध करा रहा है।

मूल शब्द – जयपुर जिला, उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र, निजी विद्यालय, नैतिक व सामाजिक मूल्य संचार माध्यम

प्रस्तावना –

इंटरनेट का विकास विभिन्न अकादमिक संस्थानों, सरकारी और सूचना प्रौधोगिकी कम्पनियों के प्रयास के फलस्वरूप हुआ। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर लियोनार्ड क्लीन रॉक को इंटरनेट का जनक कहा जाता है। सर्वप्रथम जो नेटवर्क बनाया गया उसे "एपीआर" कहा गया। इंटरनेट पर सर्वाधिक ख्याति डब्लु.डब्लु. डब्लु. (वर्ल्ड वाइड वेब) नेटवर्क की है। इसका निर्माण 1989 में जेनेवा की यूरोपीयन पार्टिकल फिजिक्स लैब ने किया था। यह इंटरनेट पर प्रयोग के लिए 1991 में उपलब्ध हो गया था। एक शोध में 12 से 32 आयु वर्ग के 1500 अमेरिकी व्यस्कों द्वारा 11 सबसे लोकप्रिय सोशल मीडिया वेबसाइट जैसे– फेसबुक, यु–ट्युब, ट्विटर, गुगल प्लस, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, रेडिट, टम्बलर, पिंटरेट वाइन और लिंकडिन इस्तेमाल करने के सम्बन्ध में उनसे प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण किया। शोधकत्ताओं ने पाया कि सोशल मीडिया पर रोजाना 2 घंटे से ज्यादा वक्त बिताने वाले लोगों के बीच आधे घंटे से भी कम वक्त बिताने वाले लोगों के बीच सामाजिक तौर पर अकेला महसूस करने के विचारों में अन्तर पाया गया।

"इंटरनेट संचार भारतीय परिप्रेक्ष्य" नामक लेख में इंटरनेट पर एक दृष्टि डालते हुए इंटरनेट का विवरण प्रस्तुत किया। उनके अनुसार इंटरनेट अत्याधुनिक संचार नेटवर्क है जो सूचना और संचार क्षेत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। यह एक ऐसी प्रौधोगिकी है जिसमें करोड़ों कम्प्यूटर नेटवर्क जुडे हुए है। यह डिजिटल स्त्रोत और रिसीवर से जोडने की प्रक्रिया है। उनके अनुसार इंटरनेट को मोटे तौर पर कम्प्यूटरों के विश्वव्यापी नेटवर्क के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो एक प्रोटोकॉल (सूचना के आदान–प्रदान सम्बंधी नियम) के जरिये संचार करते है।

शोध के उद्देश्य–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र व छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र व छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों (छात्र व छात्राओं) का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सोशल मीडिया संदर्भ में नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के संदर्भ में सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

2. उच्च माध्यमि स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सोशल मीडिया में संदर्भ में सामाजिक मूल्य में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्य में कोई अन्तर नहीं है।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का सोशल मिडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन का महत्व :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के द्वारा सोशल मीडिया से विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

2. इस शोध कार्य के द्वारा सोशल मीडिया से विद्यार्थियों के सामाजिक नैतिक मूल्यों पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि :–

समस्या से सम्बन्धित उद्धेश्यों की प्रति हेतु ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग तथ्यों के संकलन हेतु किया गया है।

अनुसंधान में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत अध्ययन के उद्धेश्यों की पुर्ति हेतु शोधकत्री द्वारा प्रस्तो के संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

शोध न्यादर्श :–

अध्ययन में न्यादर्श के रूप में विद्यालय का चयन न्यादर्श विधि से किया गया है। न्यादर्श का विवरण निम्न प्रकार से है :–

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

अध्ययन में प्रदत्तों के विश्लेषण में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है तथा ग्राफ के माध्यम से आँकड़ों को निरूपित किया गया है।

शोध सीमांकन :–

शोधकार्य का परिसीमन निम्न प्रकार है :–

1. क्षेत्र :– प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर शहर के विद्यालयों को शामिल किया गया है।

2. स्तर :– प्रस्तुत अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

3. लिंग :– प्रस्तुत अध्ययन में छात्र व छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

4. न्यादर्श :– प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श की संख्या 500 है।

5. आयाम :– प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक नैतिक मूल्यों को लिया गया है।

आँकड़ो का विश्लेषण :

क्र.सं.	श्रेणी	बालकों की संख्या	प्राप्तांक	प्रतिशत
1.	सोशल मिडिया का बालकों पर प्रभाव	500	475	95 :

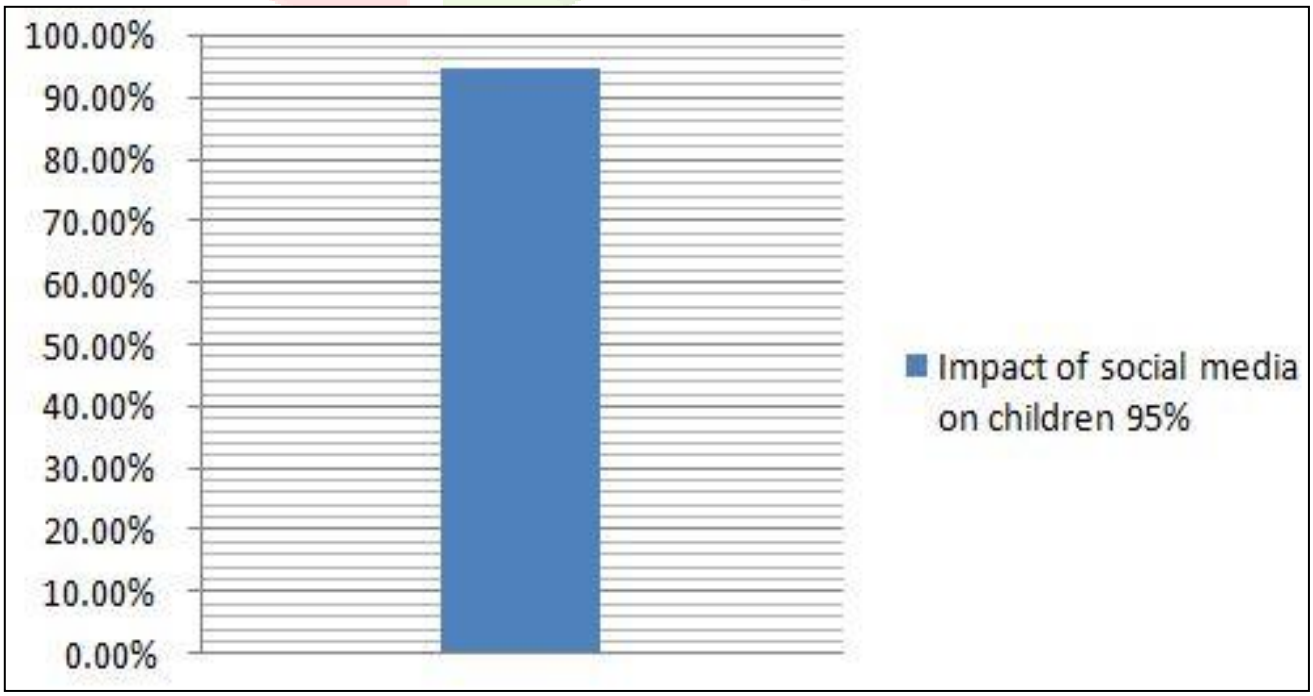

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि उच्च माध्यमिक स्तर के अध्ययनरत छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक सोशल मीडिया के संदर्भ में नैतिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव अधिक है। शिक्षा के विभिन्न संकाय में कला संकाय के विद्यालय की छात्राओं में सोशल मीडिया के प्रति अधिक सजगता पायी गई तथा वाणिज्य संकाय के छात्र व छात्राओं में कम सजगता पाई गई।

सुझाव :–

अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शैक्षिक संतुष्टि के संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये गए है–

1. उच्च माध्यमिक शिक्षा के स्तर के शिक्षकों को विधिवत सोशल मीडिया की शिक्षा लेनी चाहिए ।

2. विद्यालयों में छात्रों से सम्बन्धित सारे कार्य जैसे– गृहकार्य, दत्तकार्य, प्रोजेक्ट आदि में वह समस्या देनी चाहिए । जिससे छात्र और अध्यापक इंटरनेट की सहायता से समस्या हल कर सके ।

3. प्रत्येक विद्यालयों को मल्टीमीडिया आधारित शिक्षण व्यवस्था अपनानी चाहिए ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- **कुक.पी.एम.** – एन इन्ट्रोडक्शन एज्यूकेशनल एण्ड साईक्लोजीकल रिसर्च न्यूयार्क, एशिया पब्लिशिंग हाऊस
- **कपूर, रशिम (1989)** : वेल्यू एजुकेशन थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस, अजमेर, कृष्णा ब्रदर्श पब्लिकेशन्स, पृ. सं. 61–66
- **मैक्लोम, कारी टॉरजिशन (1982)** : वुमन एट द क्रॉसरोड्स
- **मूरे, निक (1983)** : हाउ टू डू रिसर्च, लंदन, द लाईब्रेरी एसोसिएशन
- **मिल, जॉन स्टार्ट (1970)** : एसे ऑन सेक्स इक्वलिटी
- **रमल, जे.एफ.एम (1968)** : इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोजीशन इन एजेकेशन , न्यूयार्क, हापर्र ब्रादर्स
- **सरीन एवं सरीन (2005)** : शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नई दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा.लि.
- **शर्मा, विरेन्द्र प्रकाश (2001)** : रिसर्च मैथडालॉजी, जयपुर पंचशील प्रकाशन

- **टैर्क्स टावर्ट एम. डब्ल्यू (1963) :** शिक्षा अनुसंधान की प्रस्तावना, इलाहाबादः हिन्दी संस्करण किताब महल प्रा.लि.
- **यंग, पी.वी. (1956) :** मैथड्स इन सोशल रिसर्च, न्यूयॉर्क, मेग्राहिल कम्पनी

Webliography :

1. www.genderiquality.com
2. www.wikipedia.com
3. www.desserationtopic.com
4. www.scribd.com